Hindi Reader

हिंदी

हिंदी पाठ्यपुस्तक

लेखिका:
बबीता चौधरी

With the blessings of :

Our Parents

Hindi Reader

हिंदी 7

हिंदी पाठ्यपुस्तक

Copyright @ Publishers

All rights reserved. No part of the publications may be reproduced, transmitted or distributed in any form or by any means without prior permission in written. Any person who does any unauthorised act in relation, Publications may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Limits of liability and Disclaimer of Warranty:
The Authors, Editors, Designers and the Publishers of this book have tried their best to ensure that all the texts are correct in all aspect. However, the authors and the publishers does not take any responsibility of any errors, if happened. The correction of errors, if found will duly be done in the next edition.

MADE IN INDIA

Support Recycle

Save a Tree
Save the Earth

One Ton of this Paper Saves 17 trees

Max Retail Price: On Back Cover

Edited & Designed by:
Editone International Pvt. Ltd.

Based on:

- National Education Policy 2020
- NCF 2022
- Activity Based Format
- Innovative Approach
- Learning with fun
- Eco-Friendly Paper

आमुख

विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सरल एवं स्पष्ट माध्यम भाषा ही है। भाषा में सम्मिलित कौशलों की सहायता से विचारों का आदान-प्रदान संभव हो पाता है। विद्यार्थियों के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में शैक्षिक प्रणाली का अहम् योगदान होता है। इस प्रणाली में रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय मूल्यों तथा जीवन कौशल का समावेश होना आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक शृंखला (कक्षा 1-8) में भाषा के चारों कौशल– श्रवण, वाचन, पठन, लेखन के साथ-साथ गतिविधि आधारित शिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। इस पुस्तक शृंखला में चिंतन-मनन (Thinking), विश्लेषण (Analysis), कल्पनाशीलता (Imagination), रचनात्मकता (Creativity), मूल्यांकन (Evaluation) को भी समाहित किया गया है। इसमें निर्धारित मानक वर्तनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शृंखला विद्यार्थियों की भाषा में बारीक समझ को विकसित करने में सक्षम है। साथ ही इसमें पाठ नियोजन करते समय विद्यार्थियों की रुचियों, जिज्ञासाओं एवं खोजबीन प्रवृति का पूरा ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक शृंखला की पाठ्य-सामग्री बच्चों के स्तरानुकूल, सरल, सहज एवं रोचक रूप में प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत शृंखला में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूपरेखा (NCF) 2022 को ध्यान में रखकर सभी मूल्यों को तार्किक रूप से अपनाया गया है। रचनात्मक लेखन के अंतर्गत कविता, कहानी, चित्र-कथा, संवाद, यात्रा-वर्णन एवं पत्र-लेखन आदि को शामिल किया गया है ताकि भाषा प्रयोग पर विद्यार्थियों की पकड़ मज़बूत बन सके, साथ ही विद्यार्थी व्याकरण का कुशलतापूर्वक प्रयोग कर पाएँ।

इस शृंखला में विद्यार्थियों को ऐसा मंच देने का प्रयास किया गया है, जहाँ वे आत्मविश्वास के साथ सोच-समझकर प्रश्नों का उत्तर दे सकें, साथ ही संवाद या चर्चा के द्वारा अपने सहपाठियों का दृष्टिकोण भी समझ पाएँ।

हमें यह विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक शृंखला छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक शृंखला को और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए सभी शिक्षार्थी, पाठकगण एवं शिक्षकगण के महत्वपूर्ण सुझाव अपेक्षीय हैं।

–प्रकाशक

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृ. सं.
1.	शक्ति और क्षमा (कविता)	8
2.	विक्रमादित्य का सिंहासन (कहानी)	12
3.	अतिथि देवो भवः (एकांकी)	19
4.	स्नेह-शपथ (कविता)	27
5.	अमरनाथ की यात्रा (यात्रा-वृतांत)	33
6.	सरोजिनी नायडू (जीवनी)	41
7.	क्या निराश हुआ जाए? (निबंध)	47
8.	दोहावली (कविता)	55
9.	इब्राहिम गार्दी (कहानी)	62
10.	सम्मान (कहानी)	70
11.	भगत सिंह के पत्र (पत्र)	78
12.	आदर्श माता जीजाबाई (कहानी)	84
13.	तात्या टोपे (संवाद)	92
*	स्वमूल्यांकन पत्र-1	101
*	स्वमूल्यांकन पत्र-2	103

अध्याय 1

शक्ति और क्षमा
(कविता)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

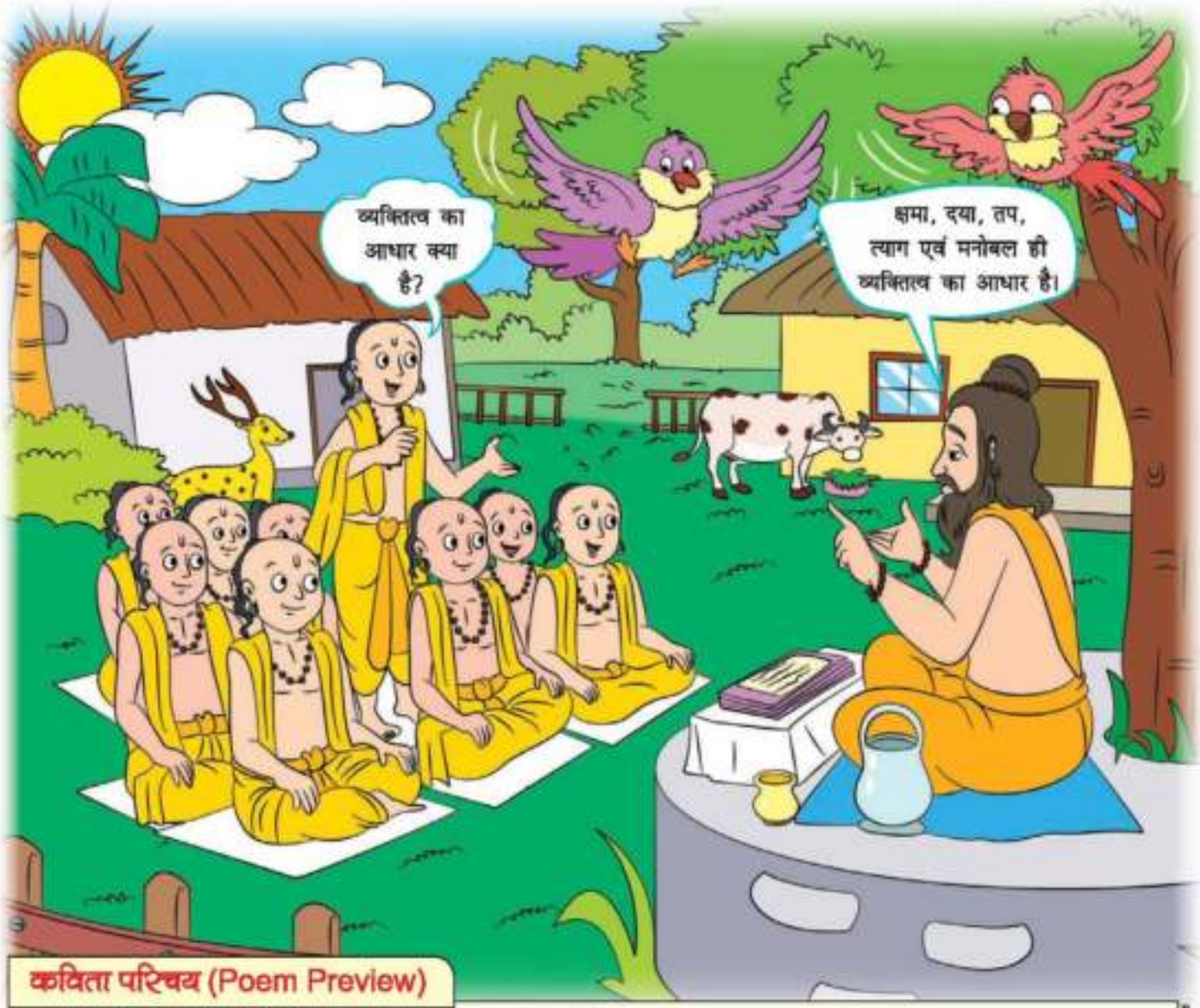

कविता परिचय (Poem Preview)

शक्ति के बिना किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति असंभव है।

कठिन शब्द (Difficult Words)

नाही-नाही ग्रहण सहनशीलता क्षमाशीलता रंतारैन सुभाषित

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल,
सबका लिया सहारा।
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे,
कहो, कहाँ, कब हारा।

क्षमाशील हो रिपु-समक्ष तुम,
विनत हुए विनत जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको,
कायर समझा उतना ही।

अत्याचार सहन करने का,
कुफल यही होता है।
पौरुष का आतंक मनुज,
कोमल होकर खोता है।।

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत सरल हो।

तीन दिवस तक पथ मांगते,
रघुपति सिंधु-किनारे।
बैठे पढ़ते रहे छंद,
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

उत्तर में जब एक नाद भी,
उठा नहीं सागर से।
उठी अधीर धधक पौरुष की,
आग राम के शर से।।

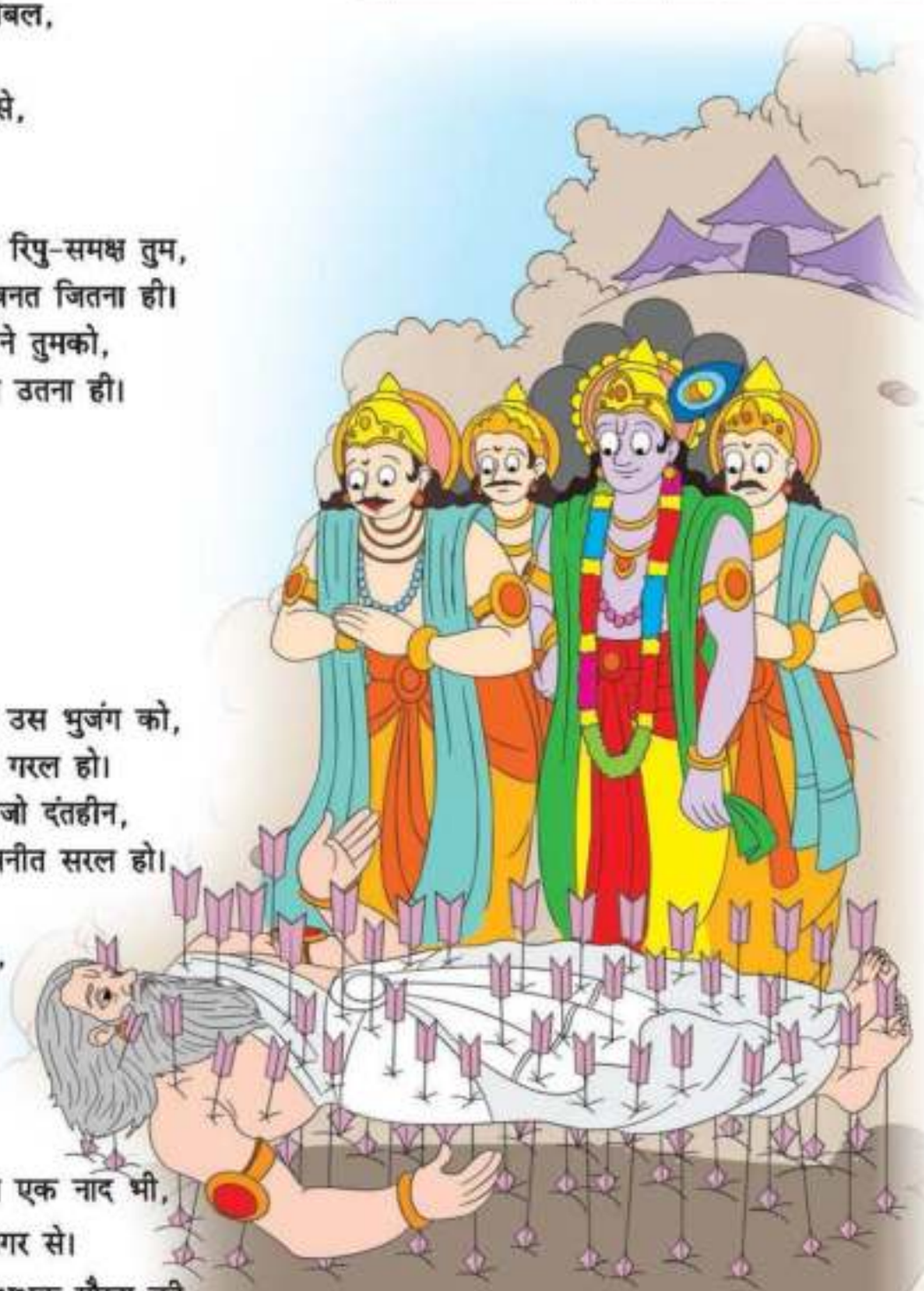

सिंधु देह धर त्राहि-त्राहि,
कहता आ गिरा शरण में।
चरण पूज दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बंधन में।।

सच पूछो तो, शर में ही,
बसती है दीप्ति विनय की।
सँधि-वचन समपूज्य उसी का,
जिसमें शक्ति विजय की।।

सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके,
पीछे जब जगमग है।।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

कविता का सारांश (Summary of the Poem)

The poem emphasizes virtues such as forgiveness, compassion, and endurance. It speaks about various qualities and the strength of character necessary to uphold righteousness and justice. The narrative describes the scene where a virtuous and wise figure, despite being severely injured and facing death, continues to uphold his duties and principles.

शब्दार्थ (Word Meaning)

नर-व्याघ्र	= मनुष्यरूपी सिंह (Lion among men)	अनुनय	= खुशामद (Flattery)
मूढ़	= मूर्ख (Fool)	भुजंग	= साँप (Snake)
शर	= बाण (Arrow)	गरल	= विष (Poison)
रिपु	= शत्रु (Enemy)	नाद	= शब्द (Sound)
सँधिवचन	= सुलह की बातें (Words of peace/conciliation)		

उच्चारण करें (Pronounce)

समपूज्य	त्राहि-त्राहि	ग्रहण	सहनशीलता	क्षमाशीलता
दंतहीन	अधीर	सुयोधन	मनोबल	

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता के माध्यम से लक्ष्य को हासिल करने के विषय में बताएँ।
Teacher to explain to the children about achieving goals through poetry.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answer the given questions.)

(क) प्रस्तुत कविता में रघुपति किस से पथ माँगते हैं?

(ख) पुरुषार्थ की पहचान किन मूल्यों से होती है?

(ग) रघुपति की शरण में त्राहि-त्राहि कर कौन आ गिरा?

(घ) विजय शक्ति की प्राप्ति कैसे संभव है?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Write the answers to the given questions.)

(क) प्रस्तुत कविता की पृष्ठभूमि क्या है एवं वक्ता की भूमिका का निर्वाहन किसने किया है?

.....

(ख) क्षमावान शत्रु यदि सामने हो तो युद्ध का परिणाम क्या होगा?

.....

(ग) युधिष्ठिर ने दुर्योधन को किन गुणों का सहारा लेकर हराया?

.....

(घ) शत्रु किससे भयभीत होकर नतमस्तक हो जाता है?

.....

3. कविता की छूटी हुई पंक्तियाँ पूरी कीजिए। (Complete the missing lines of the poem.)

(क) उत्तर में जब एक नाद भी,
उठा नहीं सागर से।

.....

.....

(ख) क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।

.....

.....

(ग) सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।
.....
.....

4. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark the correct option with a (✓) sign.)

(क) किसके बिना क्षमा आदि गुण शोभित नहीं होते?
☐ धन ☐ राज्य ☐ शक्ति ☐ क्रोध

(ख) जग कब पूजता है?
☐ जब बल दर्प हो ☐ जब जगमग हो ☐ जब विनय हो ☐ जब ये तीनों हो

(ग) तीन दिवस तक सिंधु से किसने पथ माँगा?
☐ समुद्र ने ☐ रघुपति ने ☐ दुर्योधन ने ☐ युधिष्ठिर ने

(घ) दुर्योधन-
☐ क्षमाशील था ☐ विनयी था ☐ हिंसक था ☐ स्वार्थी था

5. सही कथन पर (✓) का अथवा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।
(Mark the correct statement with a (✓) and the incorrect statement with a (✗) sign.)

(क) श्रीराम जी के धनुष पर बाण चढ़ाने से समुद्र त्राहि-त्राहि करने लगा। ☐
(ख) शक्ति के बिना नम्रता और प्रार्थना का कोई आदर नहीं करता। ☐
(ग) प्रस्तुत कविता के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। ☐
(घ) प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव प्रलोभन एवं शक्ति है। ☐

6. सही मिलान कीजिए। (Match the following correctly.)

(क)	भुजंग	(i)	शर
(ख)	धनुष	(ii)	सिंधु
(ग)	संधि-वचन	(iii)	गरल
(घ)	नर-व्याघ्र	(iv)	सुयोधन

जरा सोचिए (Critical Thinking)

7. प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव क्या है? और क्यों है? सोचकर लिखिए।
(What is the theme of the given poem? Why is it so? Write thoughtfully.)
.....
.....

8. दुर्योधन युधिष्ठिर के क्षमा, दया, विनीत और नम्र आदि गुणों को क्या समझता था? कक्षा में चर्चा कर अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
(Duryodhana thought of Yudhishthira's qualities like forgiveness, compassion, humility, and politeness as what? Discuss in class and explain in your own words.)

ज़रा भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

9. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द बताइए। (Give the synonyms of the given words.)

(क) शत्रु - ....

(ख) विष - ....

(ग) बाण - ....

(घ) समुद्र - ....

10. दिए गए शब्दों के लिंग निर्धारित कीजिए। (Determine the gender of the given words.)

(क) नर – ..... (ख) क्षमा – .....

(ग) दया – ..... (घ) शक्ति – .....

(ङ) सिंधु – ..... (च) बाण – .....

(छ) रघुपति – ..... (ज) त्याग – .....

(झ) व्याघ्र – ..... (ञ) गौरव – .....

11. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।
(Perform the sandhi-vichchhed [analysis of compound words] of the given words.)

(क) उल्लास – ..... (ख) युधिष्ठिर – .....

(ग) कदापि – ..... (घ) दंतहीन – .....

12. दिए गए शब्दों में उपसर्ग पहचानकर लिखिए।
(Identify and write the prefixes in the given words.)

(क) पौरुष – ..... (ख) अनुनय – .....

(ग) सुयोधन – ..... (घ) अधीर – .....

13. दिए गए शब्दों की वर्तनी को शुद्ध रूप में लिखिए।
(Write the correct spelling of the given words.)

(क) दिप्ती – ..... (ख) भूजंग – .....

(ग) सकक्षम – ..... (घ) गृहन – .....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

14. श्रीराम जी के उन गुणों को बताइए जिसके कारण उनके बल का दर्प जगमगाता है।
(Mention the qualities of Lord Shri Ram that make his strength shine.)

15. दुर्योधन अपने किन दोषों के कारण हार गया था? नाम बताइए।
(What were the flaws of Duryodhana that caused his defeat? Name them.)

16. कविता के आधार पर बताइए निम्न प्रकृति किससे संबंधित है?
(Based on the poem, identify what type of nature is related to the following?)

(क) क्षमावान – ..... (ख) नर-व्याघ्र – .....

(ग) मूढ़ – ..... (घ) दयालु – .....

अध्याय 2

विक्रमादित्य का सिंहासन

(कहानी)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

चंद्रगुप्त मौर्य

राजा कृष्णदेव राय

सम्राट अशोक

सम्राट मिहिरभोज

- उपरोक्त चित्र में दिए गए राजाओं के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

कहानी परिचय (Story Preview)

सम्राट विक्रमादित्य की तरह हमें भी न्यायप्रिय होना चाहिए।

कठिन शब्द (Difficult Words)

गौरवशाली शासनकाल प्रसिद्ध निपुणता विवेकपूर्ण विवाद

विक्रमादित्य के नाम से सभी लोग परिचित हैं। वह भारत के गौरवातीत सर्वोत्तम सम्राटों में से एक रहे हैं। उनका शासनकाल भारतवर्ष के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। विक्रम संवत् का आरंभ उसी से होता है। यद्यपि विक्रमादित्य का नाम इतना प्रसिद्ध है, परंतु आश्चर्य है कि हम उनके जीवन के विषय में कुछ तथ्यपरक जानकारी नहीं रखते।

विक्रमादित्य के विषय में कुछ निर्विवाद बातें लोगों के मन में घर कर गई हैं। जो उसके विषय में प्रचलित कहानियों के माध्यम से खुद को मनोरंजित करते हैं। उन्होंने अपनी प्रजा के साथ निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्याय किया। उन्हें ज्ञानी लोगों से अधिक प्रेम था जिन्हें वह अपने दरबार में विलक्षण प्रतिभा के रूप में रखते थे।

ऐसा माना जाता है कि विक्रमादित्य ने कभी किसी निर्दोष को दंडित नहीं किया। न्याय करने में वह कभी धोखा नहीं खा सके। अपराधी को जब विक्रमादित्य के सामने लाया जाता था, तो वह दंड के भय से काँपने लगता था। अपराधी को इस तथ्य का पता होता था कि विक्रमादित्य की आँखें उसके अपराध को पहचान ही लेंगी। लोग अपनी समस्याओं का उत्तम समाधान विक्रमादित्य के माध्यम से ही कर पाते थे। उसके पश्चात् भी यदि भारत में कोई न्यायाधीश अपनी पूर्ण योग्यता से निर्णय सुनाता था, तो उसके बारे में कहा जाता था कि वह विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठा होगा।

विक्रमादित्य ने अपने राज्य की राजधानी उज्जैन को बनाया था। प्राचीनकाल में उज्जैन नगरी कला और संस्कृति का केंद्र थी। परंतु समय के साथ-साथ इस नगरी के महत्व को लोग भूलते गए। जिस न्याय-सिंहासन पर बैठकर विक्रमादित्य न्याय किया करते थे, उसे भी समय के चलते लोग विस्मृत करते गए। उनका स्वर्णिम काल गए जमाने की बात हो गई। विक्रमादित्य का पुराना किला मात्र अवशेष बनकर रह गया है, जिसके टूटे-फूटे खंडहरों पर घास और वृक्ष उग आए हैं। एक समय की बात है निकटवर्ती गाँवों के लोग सायंकाल के समय गुजरते हुए वहाँ (किले के आसपास) ठहर जाते थे। पशु चरवाहे उसके चारों ओर एकत्र हो जाते और खेलने के पश्चात् एक साथ घर लौटते थे। उज्जैन के पास गाँवों के चरवाहों के लड़के चारागाह में हँसी-मज़ाक करके समय गुजारने के अनुभवी थे। वे दिन भर खेलते रहते और मवेशी चरा कर अपना पेट भरते थे।

एक दिन बच्चों को खेलने के लिए मनोहारी मैदान मिल गया। ऊबड़-खाबड़ मैदान वृक्षों के बीच स्थित था। मैदान के बीच में स्थित टीला किसी न्यायाधीश के सिंहासन की तरह लग रहा था। एक लड़का दौड़कर सिंहासन पर जा बैठा और बोला, "लड़को, मैं अब न्यायाधीश बनूँगा और तुम सब अपने मुकदमे मेरे पास लाओगे। मैं तुम्हारी सुनवाई करूँगा।" दूसरे लड़के ने जब यह तमाशा देखा तो वह झगड़ा करने लगा। प्रत्येक दल ने अपनी-अपनी बात कही। एक ने कहा- "अमुक खेत हमारा है।" और दूसरे ने कहा- "नहीं, हमारा है।" इस प्रकार वे कहते गए। वे सब चाहते थे कि वह इस झगड़े को निपटाए। तभी वहाँ के वातावरण में परिवर्तन हुआ। सभी को विचित्र-सा अहसास हुआ। टीले पर बैठने से पहले जो लड़का साधारण दिखाई देता था, अब बिल्कुल भिन्न दिखाई दे रहा था।

वह शांत और गंभीर हो गया था और उसकी बातचीत का ढंग तथा मुखमुद्रा इतने अद्‌भुत और प्रभावशाली हो गए थे, कि शेष लड़के उससे आतंकित हो गए थे। फिर भी उन्होंने सोचा कि यह केवल मज़ाक है और फिर एक नया मुकदमा उसके सामने रखा और एक बार फिर उसने अपना निर्णय सुना दिया। इस प्रकार घंटों तक यह क्रम चलता रहा। न्यायाधीश के सिंहासन पर बैठा हुआ वह उसी गंभीरता से लौटने के समय तक शिकायत सुनकर निर्णय देता रहा और फिर अपने स्थान से नीचे कूदा और दूसरे चरवाहा लड़कों के समान हो गया।

इसके बाद से वह चरवाहे का लड़का इतना प्रसिद्ध हुआ कि सभी पेचीदा झगड़े उसके सामने रखे जाते थे और बार-बार वैसा ही होता था। जब वह उस स्थान से नीचे उतरकर आता तो उसमें और अन्य लड़कों में कोई अंतर न होता था।

धीरे-धीरे निकट-दूर सभी गाँवों के बड़ी अवस्था के सभी स्त्री-पुरुष अपने झगड़े उस चरवाहे के लड़के के सामने लाने लगे और वहाँ सदैव उन्हें ऐसा निर्णय मिलता था, जिसे दोनों दल मान लेते थे और संतुष्ट होकर चले जाते थे।

अपनी राजधानी में बैठकर जब ऐसी ख़बरों का आभास राजा के कानों में पड़ा तो उसने तुरंत अनुमान लगा लिया कि वह ज़रूर राजा विक्रमादित्य का न्याय सिंहासन होगा। फिर वह विचार-मग्न होकर सोचने लगा कि पत्थर पर बैठने मात्र से लड़के में न्यायिक ज्योति आ सकती है, तो हमें क्यों न गहराई में खोदकर सिंहासन ढूँढ़ लेना चाहिए। तत्पश्चात् मैं भी विवादों का श्रवण करके न्याय-निर्णयन करूँगा।

कुदालों और फावड़ों से वह घास का टीला खोदा गया। वह लड़का जो स्वयं न्यायाधीश बनता था, बड़ा दुखी हुआ। उसने ऐसा अनुभव किया जैसे- उसकी कोई अति प्रिय वस्तु उससे छीनी जा रही हो। अंत में श्रमिकों ने कोई वस्तु देखी। उन्होंने उसे खोला तो उसके नीचे काले संगमरमर का चौकोर तख़्त पाया, जो पत्थर के बत्तीस देवदूतों के हाथों और पंखों पर टिका हुआ था। अवश्य ही वह विक्रमादित्य का सिंहासन था। खुशी-खुशी उसे नगर में लाया गया और न्याय-कक्ष में रखा गया। राजा ने अपनी प्रजा को तीन दिन तक उपवास रखने और प्रार्थना करने का आदेश दिया और घोषणा की, कि चौथे दिन वह सार्वजनिक रूप से इस सिंहासन पर बैठेगा।

अंत में वह दिन आया। राजा को अपना सिंहासन ग्रहण करते हुए देखने के लिए भारी भीड़ जमा हो गई। एक बड़े कक्ष से होते हुए राजा के साथ राज्य के पुरोहित तथा सेनापति भी आए। जब वे सिंहासन के पास आए तो दो पंक्तियों में बँट गए। राजा उनके बीच से गुजरे। जब राजा सिंहासन पर बैठने वाले थे, तो उनमें से एक देवदूत ने बोलना शुरू किया। उसने कहा- "रुको! क्या तुम स्वयं को विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठने के योग्य समझते हो? क्या तुमने ऐसे राज्यों पर शासन करने की इच्छा नहीं की, जो तुम्हारे नहीं थे?" थोड़ी देर तक राजा कोई उत्तर न सोच सका। वह जानता था कि उसका जीवन न्यायपूर्ण नहीं था। बहुत देर तक चुप रहने के बाद वह बोला- "नहीं, मैं इसके योग्य नहीं हूँ।" देवदूत ने कहा- "तो फिर जाओ और तीन दिन तक उपवास और प्रार्थना करो जिससे तुम स्वयं को पवित्र कर सको और सिंहासन पर बैठने योग्य बन सको।" ये शब्द कहकर उसने अपने पंख फैलाए और उड़ गया।

राजा ने पुनः व्रत और प्रार्थना करके स्वयं को विक्रमादित्य के न्याय-सिंहासन पर बैठने योग्य बनाया। परंतु इस बार भी वैसा ही हुआ। पत्थर के दूसरे देवदूत ने पूछा कि क्या उसने कभी दूसरों की धन-संपत्ति लेने

की नहीं सोची? राजा ने स्वीकार किया कि उसने ऐसा किया है और इसलिए वह सिंहासन पर बैठने योग्य नहीं है। इस प्रकार जब भी राजा ने सिंहासन पाने की चेष्टा की, उससे किसी-न-किसी देवदूत ने प्रश्न पूछे और उसे हटना पड़ा। ऐसा तब तक चलता रहा, जब तक उस पत्थर को पकड़े केवल एक देवदूत रह गया। राजा बड़े आत्मविश्वास के साथ सिंहासन के पास गया, क्योंकि उसे लग रहा था कि उस दिन उसे अवश्य ही अपना स्थान ग्रहण करने की अनुमति मिल जाएगी।

परंतु जैसे ही वह सिंहासन के पास पहुँचा, अंतिम देवदूत बोला- "ऐ राजा! क्या तुम्हारा हृदय बच्चे के समान बिल्कुल शुद्ध है? यदि ऐसा है तो तुम वास्तव में सिंहासन पर बैठने योग्य हो।"

राजा ने बहुत धीरे-से कहा- "नहीं, नहीं! मैं इस योग्य नहीं हूँ।" यह सुनते ही देवदूत उस सिंहासन को अपने सिर पर रखकर आकाश में उड़ गया।

इस प्रकार विक्रमादित्य का न्याय-सिंहासन सदा के लिए पृथ्वी से लुप्त हो गया।

कहानी का सारांश (Summary of the Story)

Vikramaditya was a renowned king known for his wisdom and justice. One day, a poor man and his rich neighbor came to him with a dispute over a mango tree. Vikramaditya cleverly resolved the issue by asking them to cut the tree. When the rich man agreed, the king realized the tree belonged to the poor man and returned it to him.

शब्दार्थ (Word Meaning)

तथ्य	=	आवश्यक बातें, जिनसे सूचनाएँ प्राप्त हों (Essential facts)
निकटवर्ती	=	समीप के, नज़दीक के (Nearby, close)
मनोहारी	=	आकर्षक, मन को अच्छे लगने वाले (Attractive, pleasing to the mind)
निर्णय	=	फ़ैसला (Decision, judgement)
मुकदमा	=	वाद, विवाद (Case, lawsuit)
न्यायाधीश	=	न्याय करने वाला (Judge, one who administers justice)

उच्चारण करें (Pronounce)

विक्रमादित्य गौरवातीत आश्चर्य न्यायाधीश प्राचीनकाल

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को विक्रमादित्य की जीवन-गाथा से अवगत कराएँ।
Teacher to acquaint the children with the life story of Vikramaditya.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answer the given questions.)

(क) विक्रमादित्य में किस प्रकार की अद्भुत योग्यता थी?

(ख) प्रसिद्ध सम्राट विक्रमादित्य अपने दरबार में किस प्रकार के लोगों को रखते थे?

(ग) प्राचीनकाल में उज्जैन को किस प्रकार की प्रसिद्धि हासिल थी?

(घ) पत्थर के सिंहासन पर बैठकर चरवाहा किस प्रकार की मुखमुद्रा का अनुसरण कर लेता था?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Write the answers to the given questions.)

(क) विक्रमादित्य के सम्मुख लाया गया अपराधी किस तथ्य से परिचित होता था?

.....

(ख) राजा किस प्रकार की ख़बरों को सुनकर उत्तेजित हो उठा?

.....

(ग) राजा के सिंहासनरूढ़ होने के पूर्व पहले देवदूत ने क्या प्रश्न किया?

.....

(घ) अंतिम देवदूत, राजा से प्रश्न करके क्या व्यक्त करना चाहता था?

.....

(ङ) सिंहासन के नगर आगमन पर राजा ने क्या घोषणा की?

.....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (Fill in the blanks in the given sentences.)

(क) विक्रमादित्य ने कभी किसी ..... को दंडित नहीं किया।

(ख) राजा विक्रमादित्य का पुराना किला मात्र ..... बनकर रह गया है।

(ग) ..... पर बैठने से जो लड़का साधारण दिखाई देता था, अब बिल्कुल भिन्न दिखाई दे रहा था।

(घ) श्रमिकों ने जब अति प्रिय वस्तु को खोला तो उसके नीचे ..... संगमरमर का चौकोर तख़्त पाया।

(ङ) जब भी राजा ने ..... पाने की चेष्टा की उससे, किसी-न-किसी देवदूत ने प्रश्न पूछे और उसे हटना पड़ा।

4. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark the correct option with (✓).)

(क) सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी कहाँ स्थित थी?

☐ उज्जैन ☐ पचमढ़ी ☐ प्रयाग ☐ अवध

(ख) लड़का कौन-से अभिनय को करते हुए चेहरे को सीधा कर गंभीर मुद्रा में बैठ गया।

☐ सिपाही ☐ मंत्री ☐ न्यायाधीश ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) चारागाह के पास का खंडहर किस का महल हुआ करता था?

☐ भोज ☐ अशोक ☐ श्रीगुप्त ☐ विक्रमादित्य

(घ) राजा अपने जीवन के बारे में क्या जानता था?

☐ वह कभी सफल नहीं हुआ ☐ वह न्यायपूर्ण नहीं था

☐ वह निरर्थक था ☐ इनमें से कोई नहीं

5. सही वाक्य पर (✓) अथवा गलत वाक्य पर (✗) का चिह्न लगाइए।
(Mark the correct sentence with (✓) and the incorrect sentence with (✗).)

(क) राजा विक्रमादित्य निष्पक्ष रूप से पूर्ण न्याय किया करते थे। ☐

(ख) टूटे-फूटे खंडहरों पर घास और वृक्ष उग आए थे। ☐

(ग) चरवाहे का लड़का सदैव एक ही भाव-भंगिमा में रहा करता था। ☐

(घ) टीले को खोदने के लिए कुछ विशेष प्रकार के यंत्रों का प्रयोग किया गया था। ☐

(ङ) राजा विक्रमादित्य का सिंहासन सदा के लिए पृथ्वी से लुप्त हो गया। ☐

6. सही मिलान कीजिए। (Make the correct matches.)

(क) सम्राट	(i) लड़के की
(ख) चरवाहे का लड़का	(ii) सिंहासन
(ग) विचित्र मुख-मुद्रा	(iii) बत्तीस
(घ) न्याय का	(iv) न्यायाधीश
(ङ) देवदूतों की संख्या	(v) विक्रमादित्य

जरा सोचिए (Critical Thinking)

7. सदाचारी एवं दुराचारी व्यक्ति एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न होते हैं? सोच-समझकर बताइए।
(How do virtuous and immoral people differ from each other? Think carefully and explain.)

ज़रा भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

8. दिए गए शब्दों को विच्छेदित करते हुए लिखिए। (Break down and write the given words.)

(क) न्यायाधीश – ..... (ख) विक्रमादित्य – .....

(ग) सिंहासन – ..... (घ) उज्जैन – .....

9. दिए गए शब्दों का शुद्धीकरण करके लिखिए। (Correct the given words and write them.)

(क) पूरौहित – ..... (ख) संसक्रति – .....

(ग) मूखमूदरा – ..... (घ) परतीभा – .....

10. दिए गए प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए तीन-तीन शब्द निर्मित कीजिए।
(Create three words using the given suffixes.)

(क) औटी – ....

(ख) इयल – ....

(ग) ऊ – ....

(घ) आप – ....

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

11. अपने आसपास के वातावरण का अवलोकन करते हुए कोई एक कहानी का लेखन कीजिए।
(Write a story based on the observation of your surrounding environment.)

12. अन्यायी राजा की तुलना में न्यायिक व्यक्ति की अधिक महत्ता होती है। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
(A just person is more important compared to an unjust king. Discuss this topic in class.)

ज़रा दिमाग़ लगाइए (Brain Storming Activity)

13. वर्तमान न्यायपालिका को किस प्रकार वर्गीकृत किया गया है? लिखिए।
(How has the current judiciary been classified? Write about it.)

.....

.....

.....

.....

.....

अध्याय 3

अतिथि देवो भवः
(एकांकी)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

एकांकी परिचय (One-act Play Preview)

आत्मत्याग की भावना, पाषाण और वज्र हृदयों को भी मोम-सा कोमल बना देती है।

कठिन शब्द (Difficult Words)

परोपकार	करुणा	विनम्रता	महापुरुष	प्रेरणा	जीवन-नीति

पहला दृश्य

अरावली का सुनसान वन। एक छोटी-सी सरिता कल-कल करती हुई बह रही है। सरिता के तट पर दो बच्चे खेल रहे थे। उनमें एक का नाम सुंदर और दूसरे का नाम चंपा है।)

सुंदर : क्यों बहन चंपा, हम दोनों राजा की संतान हैं न?

चंपा : हाँ भाई।

सुंदर : तो फिर हम दोनों को आधा पेट खाकर ही प्रतिदिन क्यों सो जाना पड़ता है? तुम तो अपनी कहानियों में कहा करती थीं कि राजाओं के पुत्र बड़े राजभवनों में रहते हैं और उन्हें बहुत अच्छा खाना भी मिला करता है।

चंपा : (उदास होकर) किंतु हम दोनों उन राजाओं की संतान के समान सुंदर नहीं हैं। हमारे और उनके जीवन में जमीन और आसमान का अंतर है।

चंपा : हाँ, राजा की संतान हैं, किंतु उस राजा की संतान हैं, जिसने अपने देश के गौरव के लिए वनों को अपना राजभवन और फल-फूलों को अपना आहार बनाया है।

सुंदर : तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही है, बहन!

चंपा : अभी तुम मेरी इस बात को नहीं समझ सकोगे सुंदर ! जब कुछ सयाने हो जाओगे तब अपने आप समझ जाओगे।?

सुंदर : तुम्हारी इस बात को इस समय मैं समझना भी नहीं चाहता बहन, मैं तो इस समय भूख से व्याकुल हो रहा हूँ। तुम जानती हो, कल मुझे रोटी का एक छोटा-सा टुकड़ा ही खाने को मिला था। अब नहीं रहा जाता बहन। चलो, नदी का दो घूँट जल पीकर ही भूख शांत करें।

चंपा : नहीं सुंदर, आतुर न हो। आज मैं तुम्हें भरपेट रोटियाँ खिलाऊँगी।

सुंदर : भरपेट रोटियाँ खिलाओगी? किंतु रोटियाँ आएँगी कहाँ से? प्रतिदिन एक ही टुकड़ा रोटी तो हम लोगों के हिस्से में आता है। कहीं तुमने अपने हिस्से की रोटियाँ तो नहीं बचा रखी हैं?

चंपा : ये जानकर क्या करोगे सुंदर? तुम्हें केवल रोटियाँ खाने से मतलब है, मैं उन्हें चाहे जहाँ से भी लाऊँ।

सुंदर : किंतु मैं अकेले उन रोटियों को नहीं खाऊँगा बहन! अच्छा चलो, हम दोनों एक साथ बैठकर, बाँटकर खाना खाते हैं।

चंपा : अभी जरा ठहरो। सुंदर, देखो मेरे फूलों की माला तैयार हो गई है। पहले मैं तुम्हारे गले में डाल दूँ।

(चंपा फूलों की माला गूँथकर सुंदर के गले में डालती है। सुंदर सहसा चीख पड़ता है और माला तोड़कर भूमि पर फेंक देता है। चंपा आश्चर्य से देखती है, फूलों में एक मधुमक्खी छिपी थी। सुंदर रोने लगता है। चंपा उसे रोटी का लालच दिलाकर झोपड़ी की ओर ले जाती है।)

दूसरा दृश्य

(**स्थान** : वन के मध्य महाराणा प्रताप की झोपड़ी। उनके द्वार पर एक अतिथि आया है। झोपड़ी के द्वार पर बहुत बड़ा शिलाखंड पड़ा है। महाराणा प्रताप उदास होकर उसी पर लेटे हुए हैं। महारानी गुणवती पास ही बैठकर उनके उदास चेहरे की ओर देख रही हैं।)

महाराणा प्रताप : अफ़सोस, आज अवस्था यहाँ तक पहुँच गई है।

गुणवती : किंतु चिंता करने से क्या फायदा? जब विपत्ति के मार्ग पर पैर रखा है तो कठिनाइयाँ तो झेलनी ही पड़ेंगी।

महाराणा प्रताप : मैं भूखा रह जाऊँ, मेरे बच्चे रोटियों के लिए तड़प-तड़पकर जान दे दें और तुम भूख-प्यास की ज्वाला में जलकर सदा के लिए मुझसे अलग हो जाओगी, मुझे स्वीकार है, किंतु मुझे यह स्वीकार नहीं है कि मेरी झोपड़ी में आया हुआ अतिथि भूखा सो जाए।

गुणवती : किंतु झोपड़ी में तो अन्न का एक भी दाना नहीं है।

महाराणा प्रताप : कुछ भी हो, अतिथि को भोजन कराना ही पड़ेगा।

गुणवती : तो चलिए, हम लोग वन से फल-फूल चुन लाएँ और अतिथि को भोजन कराएँ।

(महाराणा प्रताप और गुणवती, दोनों वन में जाने के लिए तैयार होते हैं। सहसा सुंदर को छाती से चिपकाए हुए चंपा का प्रवेश।)

चंपा : पिता जी, आप व्याकुल न हों। अतिथि को भोजन मैं कराऊँगी।

महाराणा प्रताप : (आश्चर्य से) अतिथि को तुम भोजन कराओगी!

चंपा : हाँ, मैं भोजन कराऊँगी। दो-तीन दिन से मैंने अपने हिस्से की रोटियाँ बचाकर सुंदर के लिए रख छोड़ी हैं। सुंदर सो गया है, इसलिए अब यह नहीं खा सकेगा।

(चंपा दौड़कर झोपड़ी में जाती है और रोटियाँ लाकर केले के एक पत्ते पर अतिथि के सामने रख देती है।)

चंपा : लीजिए महाराज ! हम गरीबों के पास रूखी-सूखी रोटियों को छोड़कर और आपको मिल ही क्या सकता है?

अतिथि : (रोटियों का टुकड़ा खाकर) रोटियाँ सूखी हैं किंतु इनमें अमृत का स्वाद है बेटी! ऐसी मीठी रोटियाँ तो मैंने जीवन में कभी भी नहीं खाईं।

चंपा : यह आपकी कृपा है महाराज!

अतिथि : किंतु बेटी, क्या मैं तुमसे ये पूछ सकता हूँ कि तुम कौन हो और इस भयानक वन में क्यों इतनी आपदाएँ झेल रही हो?

चंपा : मैं महाराणा प्रताप की पुत्री हूँ महाराज! स्वदेश के गौरव के लिए विपत्तियाँ उठाना महाराणा प्रताप की संतान अपना धर्म समझती है।

अतिथि : किंतु वन में भूख-प्यास की ज्वाला में जलकर तुम अपने देश के गौरव की रक्षा कैसे कर सकती हो, बेटी?

चंपा : केवल अकबर के सामने अपना मस्तक न झुकाकर! इसी में आत्मा को सुख है, इसी में हृदय को संतोष है।

(अतिथि आश्चर्यचकित होकर चंपा की ओर देखता है और रोटियों की प्रशंसा करके झोपड़ी की ओट में जाकर छिप जाता है।)

तीसरा दृश्य

(**स्थान** : झोपड़ी का द्वार। चंपा कई दिनों से भूखी है। अतिथि तृप्त होकर झोपड़ी के द्वार से गया है। चंपा फूली नहीं समाती। वह दौड़ती हुई झोपड़ी में प्रवेश करती है, किंतु द्वार पर एक पत्थर से टकराकर गिर पड़ती है। महाराणा प्रताप दौड़कर उसके पास जाते हैं और उसे अपनी गोद में उठा लेते हैं।)

महाराणा प्रताप : क्या अधिक चोट लगी है बेटी?

चंपा : कुछ नहीं पिता जी! आप चिंता न करें। केवल एक हल्की-सी चोट है।

महाराणा प्रताप : (रक्त देखकर) हल्की-सी चोट है, किंतु तुम्हारा तो सिर फट गया है चंपा। ओह! अब यह नहीं देखा जाता! (अपने आपसे)

प्रताप, सचमुच तू बड़ा अभागा है। तेरे ही कारण तेरे बच्चों की आज यह दुर्गति हो रही है। यदि तू अकबर की बात मानकर उससे संधि कर लेता तो आज अरावली के सुनसान वन में तुझे यह भयानक दृश्य न देखना पड़ता।

चंपा : (सचेत होकर) पिता जी, यह आप क्या कह रहे हैं? क्या आप अकबर से संधि कर लेंगे? क्या आप कष्टों से घबराकर अमर सुख को नष्ट कर देंगे? क्या आपने इसीलिए इतने दिनों तक वन के फल-फूल खाकर अपने दिन बिताए?

महाराणा प्रताप : (आँखों में आँसू भरकर) तो फिर क्या करूँ बेटी?

चंपा : प्रतिज्ञा कीजिए पिता जी कि हम कभी भी अपना मस्तक अकबर के सामने नहीं झुकाएँगे।

महाराणा प्रताप : अच्छा बेटी, प्रतिज्ञा करता हूँ कि हम कभी भी अपना मस्तक अकबर के सामने नहीं झुकाएँगे।

चंपा : ठीक है, अब मेरी साध ना सफल हुई। अच्छा, अब माता-पिता, दोनों को सदा के लिए प्रणाम....!

(चंपा आँखें बंद कर लेती है। गुणवती ज़ोर

से रो उठती है। प्रताप की आँखों में भी जल भर जाता है। तभी झोपड़ी में अतिथि का असली वेश में प्रवेश।)

अतिथि : महाराणा प्रताप, आप धन्य हैं। आपकी संतानों का आत्मत्याग, पाषाण और वज्र हृदयों को भी मोम-सा कोमल बना देने वाला है।

महाराणा प्रताप : (अतिथि की ओर देखकर) कौन? दिल्ली सम्राट अकबर!

अकबर : आपकी अमृतमयी रोटियों को खाने वाला आपका अतिथि।

(बालिका चंपा के शव को देखकर अकबर की आँखों में भी जल भर आता है। ऐसा जल भर आता है कि वैसा पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग में कहीं खोजने पर भी नहीं मिलेगा।)

(परदा गिरता है।)

एकांकी का सारांश (Summary of the One-act Play)

The play features a conversation between Shanta and Sunder, discussing the importance of moral values such as kindness, honesty, and compassion. They reflect on how these values can positively impact their lives and relationships.

शब्दार्थ (Word Meaning)

सरिता	= नदी (River)
तट	= किनारा (Bank, Shore)
सयाने	= व्यस्क, बुद्धिमान (Adult, Wise)
व्याकुल	= बेचैन (Restless, Anxious)
आतुर	= अधीर, उत्तेजित (Impatient, Excited)
सहसा	= अचानक, एकदम से (Suddenly, All of a sudden)
शिलाखंड	= पत्थर का टुकड़ा (Piece of rock, Boulder)
अभागा	= जिसकी किस्मत खराब हो (Unfortunate, Unlucky)
प्रतिज्ञा	= दृढ़-संकल्प (Vow, Firm resolution)
पाषाण	= पत्थर (Stone, Rock)

उच्चारण करें (Pronounce)

गूँथकर तड़प-तड़पकर स्वीकार विपत्तियाँ तृप्त

आश्चर्यचकित दुर्गति आत्मत्याग

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को महाराणा प्रताप के जीवन-चरित्र के बारे में विस्तार से समझाएँ।
Teacher to explain in detail to the children about the life and character of Maharana Pratap.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answer the given questions.)

(क) महाराणा प्रताप की कितनी संतानें थी? नाम बताइए।

(ख) भूख से पीड़ित भाई ने व्याकुल होकर अपनी बहन से क्या बोला?

(ग) फूलों की माला को गले में ग्रहण करने से भाई क्यों चीख पड़ा?

(घ) सूखी रोटियाँ खाकर अतिथि को अमृत समान क्यों महसूस हुआ?

(ङ) भोजन के लिए द्वार पर आने वाला अतिथि कौन था?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Write the answers to the given questions.)

(क) बहन ने भाई को सरिता जल को ग्रहण करने से क्यों मना किया?

.....

(ख) अतिथि को भोजन करने के लिए चंपा ने क्यों कहा?

.....

(ग) चंपा के जवाब से अतिथि के आश्चर्यचकित होने का क्या कारण था?

.....

(घ) महाराणा प्रताप का चंपा के समक्ष प्रतिज्ञा लेने का कारण लिखिए।

.....

(ङ) अतिथि का भाव-विभोर होने की क्या वजह थी?

.....

3. दिए गए वाक्यों में सही कथन पर (✓) तथा गलत कथन पर (✗) का चिह्न लगाइए।
(Mark (✓) for true statements and (✗) for false statements in the given sentences.)

(क) सुंदर को अपने राजकुमार होने पर शक था। ☐

(ख) महाराणा प्रताप ने देश के गौरव के लिए वनों को अपना राजभवन बनाया। ☐

(ग) बहन को अपने भाई पर बिल्कुल भी दया नहीं आई, सारी रोटियाँ स्वयं खा ली। ☐

(घ) अतिथि दरवाज़े से बिना खाए-पीए ही लौट गया। ☐

(ङ) चंपा शिलाखंड से टकराकर लहुलुहान हो गई। ☐

4. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। (Fill in the blanks in the given sentences.)

(क) सुंदर जब कुछ ..... हो जाओगे तब अपने आप समझ जाओगे।

(ख) बहन, मैं तो इस समय भूख से ..... हो रहा हूँ।

(ग) मैंने अपने हिस्से की ..... बचाकर सुंदर के लिए रख छोड़ी हैं।

(घ) वन में भूख-प्यास की ..... में जलकर तुम अपने देश के ..... की रक्षा कैसे कर सकती हो?

(ङ) हम कभी भी अपना मस्तक ..... के सामने नहीं झुकाएँगे।

5. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark (✓) on the appropriate option.)

(क) दोनों भाई-बहन कहाँ पर क्रीड़ा कर रहे थे?

☐ तालाब किनारे ☐ समुद्र किनारे ☐ नदी किनारे ☐ महल में

(ख) खाने के लिए अतिथि को रोटियाँ किसने दीं?

☐ गुणवती ने ☐ चंपा ने ☐ महाराणा प्रताप ने ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) शास्त्रों में अतिथि को किसके समान माना गया है?

☐ राजा के ☐ देवता के ☐ भगवान के ☐ नौकर के

(घ) अतिथि का वेश धारण करके दरवाज़े पर कौन आया था?

☐ मंत्री ☐ सैनिक ☐ राजा ☐ अकबर

(ङ) महाराणा प्रताप की पत्नी का क्या नाम था?

☐ गुणवती ☐ शक्तिवती ☐ धनवंती ☐ लक्ष्मी

6. सही मिलान कीजिए। (Match correctly.)

(क) अकबर	(i) पत्नी
(ख) महाराणा प्रताप	(ii) सुपुत्री
(ग) गुणवती	(iii) पुत्र
(घ) चंपा	(iv) राजपूत राजा
(ङ) सुंदर	(v) अतिथि

ज़रा सोचिए (Critical Thinking)

7. "कठिन परिस्थितियाँ इनसान की मानसिक स्थिति को विक्षिप्त कर देती हैं।" क्या आप इस विचार से सहमत हैं? सोच-समझकर बताइए।
(Difficult circumstances can drive a person to madness." Do you agree with this idea? Explain thoughtfully.)

जरा भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

8. दिए गए शब्दों का प्रयोग करके वाक्य निर्मित कीजिए।
(Construct sentences using the given words.)

(क) दुर्गति – .....

(ख) अतिथि – .....

(ग) व्याकुल – .....

(घ) विपत्ति – .....

(ङ) गौरव – .....

9. दिए गए शब्दों के वचन परिवर्तित करके लिखिए। (Write the plural forms of the given words.)

(क) आपत्ति – ..... (ख) रोटी – .....

(ग) झोपड़ी – ..... (घ) धर्म – .....

10. दिए गए भावों को प्रकट करते हुए विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग कर एक-एक वाक्य निर्मित कीजिए।
(Create one sentence each using interjections that express the given emotions.)

(क) भय – .....

(ख) हर्ष – .....

(ग) आशीर्वाद – .....

(घ) घृणा – .....

(ङ) स्वीकृति – .....

जरा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

11. 'महाराणा प्रताप' के जीवन-चरित्र का वर्णन कीजिए।
(Describe the life and character of 'Maharana Pratap'.)

जरा दिमाग लगाइए (Brain Storming Activity)

12. अरावली की पहाड़ियों को भारतीय मानचित्र की सहायता से देखिए और पहचानिए कि ये किस दिशा में स्थित हैं?
(Using an Indian map, observe and identify in which direction the Aravalli hills are located.)

अध्याय 4

स्नेह-शपथ
(कविता)

अध्ययन से पूर्व (Before Study)

कविता परिचय (Poem Preview)

परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को परिवर्तित कर लेना चाहिए।

कठिन शब्द (Difficult Words)

परिचित	दीन	जिह्वा	भ्रष्ट	जतन	शपथ

हो मित्र या कि वह शत्रु हो,
परिचित हो या परिचय-विहीन;
तुम जिसे समझते रहे बड़ा
या जिसे मानते रहे दीन,
यदि कभी किसी कारण से
उसके यश पर उड़ती दिखे धूल,
तो सख़्त बात कह उठने की
तेरी जिह्वा से हो न भूल।
मत कहो कि वह ऐसा ही था
मत कहो कि इसके सौ गवाह,
यदि सचमुच ही वह फिसल गया
या पकड़ी उसने गलत राह,
तो सख़्त बात से नहीं, स्नेह से
काम ज़रा लेकर देखो;
अपने अंतर का नेह,
अरे, देकर देखो।
कितने भी गहरे रहें गर्त,
हर जगह प्यार जा सकता है,
कितना भी भ्रष्ट ज़माना हो,
हर समय प्यार भा सकता है;
जो गिरे हुए को उठा सके
इससे प्यारा कुछ जतन नहीं,
दे प्यार उठा पाए न जिसे
इतना गहरा कुछ पतन नहीं।
देखने से प्यार भरी आँखें
दुस्साहस पीले होते हैं,
हर एक धृष्टता के कपोल
आँसू से गीले होते हैं।
तो सख़्त बात से नहीं
स्नेह से काम ज़रा लेकर देखो,
अपने अंतर का नेह,
अरे, देकर देखो।
तुमको शपथों से बड़ा प्यार,
तुमको शपथों की आदत है;
है शपथ गलत, है शपथ कठिन,
हर शपथ की लगभग आफ़त है;
ली शपथ किसी ने और किसी के
आफ़त पास सरक आई।

तुमको शपथों से प्यार मगर,
तुम पर शपथें छाईं-छाईं।
तो तुम पर शपथ चढ़ाता हूँ,
तुम इसे उतारो स्नेह-स्नेह,
मैं तुम पर इसको मढ़ता हूँ
तुम इसे बिखेरो गेह-गेह।
है शपथ तुम्हें करुणाकर की
है शपथ तुम्हें उस नंगे की;
जो भीख स्नेह की माँग-माँग
मर गया कि उस भिखमंगे की।
है, सख़्त बात से नहीं
स्नेह से काम ज़रा लेकर देखो,
अपने अंतर का नेह
अरे, देकर देखो।

– भवानी प्रसाद मिश्र

कविता का सारांश (Summary of the Poem)

The poem emphasises the importance of adjusting one's actions according to circumstances. It advises not to be stubborn or rigid, but rather to be flexible and adaptable. The poet uses various analogies, such as dealing with a friend or foe, and managing different life situations, to illustrate that success often comes from being able to change one's approach when needed.

शब्दार्थ (Word Meaning)

करुणाकर	= करुणा करने वाला (One who shows compassion)		
जतन	= कोशिश, प्रयास (Effort)	आफ़त	= विपत्ति (Calamity)
गेह	= गृह, घर (Home)	अंतर	= हृदय (Heart)
पतन	= नष्ट हो जाना (Destruction)	यश	= कीर्ति, सम्मान (Fame)
विहीन	= बिना, रहित (Without)	गवाह	= साक्षी, दृश्यकर्ता (Witness)
स्नेह	= प्यार, प्रेम (Love)		

उच्चारण करें (Pronounce)

सख़्त	दुस्साहस	परिचित	शपथों	भ्रष्ट
करुणाकर	धृष्टता	स्नेह		

शिक्षण संकेत (Teaching Prompts)

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कविता का मूल भाव समझाएँ। बच्चों को प्रेमपूर्वक रहने के लिए प्रेरित करें।
Teacher to explain the essence of the poem to the children. Encourage the children to live with love and harmony.

अभ्यास Exercise

ज़रा बोलिए (Speaking Skills)

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए। (Answer the given questions.)

(क) प्रस्तुत कविता में किस पर धूल उड़ने की बात कही है?

(ख) मित्र तथा शत्रु के अनादर होने पर क्या करना चाहिए?

(ग) धृष्ट व्यक्ति कब समर्पण कर देता है?

(घ) कविता में कवि ने किसकी शपथ का हवाला दिया है?

ज़रा लिखिए (Writing Skills)

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (Write the answers to the given questions.)

(क) प्रेम का प्रभाव किस-किस पर पड़ता है?

.....

(ख) किसी व्यक्ति से गलती हो जाने पर उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

.....

(ग) कवि ने प्यार की असीमित शक्ति को कैसे सिद्ध किया है?

.....

(घ) कविता में शपथ को हर-घर बिखेरने के लिए क्यों कहा गया है?

.....

(ङ) करुणाकर की शपथ धारण करने के लिए कवि क्यों कह रहा है?

.....

3. दी गई पंक्तियों को पूरा कीजिए। (Complete the given lines.)

(क) तुम जिसे समझते रहे बड़ा, ... ,
..... , ... ,
..... , तेरी जिह्वा से हो न भूल।

(ख) कितने भी हरे रहें गर्त, ... ,
..... , हर समय प्यार भा सकता है;

(ग) ..... , ... ,
..... , इतना गहरा कुछ पतन नहीं;
..... , तुमको शपथों की आदत है,
..... , ... ,
..... , आफ़त पास सरक आई!

4. सही मिलान कीजिए। (Match correctly.)

(क)	सख़्त	(i)	प्रेम
(ख)	गेह	(ii)	दुश्मन
(ग)	नेह	(iii)	कठोर
(घ)	मित्र	(iv)	दोस्त
(ङ)	शत्रु	(v)	ग्रह

5. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए। (Mark (✓) on the appropriate option.)

(क) कविता में 'सबसे प्यारा जतन' किसे कहा गया है?

☐ धृष्टता को ☐ गिरे हुए को उठाने को
☐ गर्त में गिराने को ☐ इनमें से कोई नहीं

(ख) कवि के द्वारा शपथ को किस प्रकार उतारने के लिए कहा गया है?

☐ प्रेमपूर्वक ☐ कठोरता से ☐ कायरता से ☐ दृढ़ता से

(ग) प्रस्तुत कविता के रचयिता कौन हैं?

☐ हजारी प्रसाद द्विवेदी ☐ हरिवंशराय बच्चन
☐ भवानी प्रसाद मिश्र ☐ मोहनलाल वर्मा

(घ) हमें किसकी सहायता करनी चाहिए?

☐ दुश्मन की ☐ मित्र की ☐ दोनों की ☐ किसी की नहीं

(ङ) कविता में प्रयुक्त शब्द 'आफ़त' से क्या तात्पर्य है?

☐ संपत्ति ☐ आपत्ति ☐ सफलता ☐ कलंकित

ज़रा सोचिए (Critical Thinking)

6. 'प्रेम रक्त' व्यक्ति किसी भी कार्य को सुचारू रूप से करवाने में सक्षम होता है।" इस कथन से आप क्या समझते हैं? सोच-समझकर बताइए।
("A person with a loving nature can efficiently get any work done." What do you understand by this statement? Explain thoughtfully.)

ज़रा भाषा पर ग़ौर कीजिए (Language Skills)

7. **दिए गए शब्दों से वाक्य का निर्माण कीजिए।**
(Construct sentences using the given words.)

(क) शपथ – .....

(ख) भ्रष्ट – .....

(ग) करुणा – .....

(घ) कठिन – .....

(ङ) परिचित – .....

8. **दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।**
(Perform the Sandhi-viched of the given words.)

(क) परिणाम – ..... + ...

(ख) दिगंबर – ..... + ...

(ग) भविष्य – ..... + ...

(घ) दुष्कर्म – ..... + ...

(ङ) पित्राज्ञा – ..... + ...

9. **दिए गए वाक्यों में कारक को रेखांकित करके लिखिए।**
(Underline and write the case (Karaka) in the given sentences.)

(क) हेमंत ने राष्ट्रपति के हाथों पुरस्कार पाया।

(ख) बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा जमा किया गया।

(ग) विनय ने फीस माफ़ी हेतु पत्र लिखा।

(घ) विकास अपने भाई की मदद कर रहा है।

(ङ) वरूणा दादा जी के साथ स्कूल गई।

ज़रा रचनात्मक कार्य कीजिए (Creative Skills)

10. **'स्नेह से वंचित व्यक्ति का स्वभाव कठोर हो जाता है।' इस विषय पर कक्षा में संवाद कीजिए।**
(Conduct a classroom discussion on the topic "A person deprived of affection becomes harsh in nature.")

For Full PDF

Click The Link Below